9.कपड़ों की देख-रेख तथा उनका रखरखाव

आप जानते हैं कि कपड़े पहनने वाले के व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ कहते हैं? कपड़ों का ध्यानपूर्वक चयन करना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। किन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है इनकी धुलाई तथा इनका रखरखाव ताकि कपड़ों की सुन्दरता को बनाए रखा जा सके। जब हम कपड़े पहनते हैं तो वे गंदे भी होते हैं और उन्हें धोने की आवश्यकता होती है। गंदगी, दाग-धब्बों, धूल, ग्रीस तथा पसीने के कारण कपड़ों को धोना पड़ता है। यदि ये कपड़ों में लंबे समय के लिए बने रहते हैं तो कपड़ों को निम्नलिखित नुकसान हो सकते हैं:

1. दाग-धब्बों तथा धूल आदि जीवाणु फफूँद या अन्य हानिकारक जीवाणुओं के विकास के माध्यम बन जाते हैं जो त्वचा रोगों को जन्म देते हैं तथा व्यक्तिगत साफ-सफाई में समस्या उत्पन्न करते हैं।

2. मैले कपड़े अपनी ताजगी खो देते हैं तथा उनसे दुर्गंध आने लगती है।

3. कपड़ों में धूल तथा दाग-धब्बों को लंबे समय तक वैसे ही छोड़ने से कपड़े की मजबूती कम हो जाती है।

4. दाग लगे तथा गंदे कपड़े पहनना किसी को भी अच्छा नहीं लगता है। कपड़ों को पहनने के बाद हर बार धोने की आवश्यकता नहीं होती है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कपड़े किस मौसम में पहने जा रहे हैं तथा उनमें कितना पसीना समाया हुआ है। जब मौसम अच्छा होता है और आपको पसीना नहीं आ रहा हो तो आप अपने कपड़ों को बिना धोए दोबारा प्रयोग कर सकते हैं। किन्तु पहने हुए कपड़ों को पुनः पहनने के लिए रखे जाने से पूर्व अपने कपड़ों की देखरेख के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. झाड़ने से कपड़ों पर लगी धूल निकल जाती है। अपनी ड्रैस दोनों हाथों से पकड़ कर उसे अच्छी तरह से झाड़ लें । मखमल, कॉरड्राई, शनील, कंबल तथा कालीन जैसी वस्त्र मोटे होते हैं तथा इनकी सतह पर रेशे होते हैं जिस पर धूल आसानी से जम जाती है। इसे हटाने के लिए एक नरम कपड़े से उस पर सुगमता से ब्रश करें ।

2 लॉंडरिंग (laundering)/ धुलाई-

लांडरिंग से तात्पर्य केवल कपड़ों की धुलाई नहीं है। इस प्रक्रिया में निम्नलिखित तीन चरण शामिल हैं:

1. कपड़ों से धूल, पसीना व दुर्गंध आदि को निकालने के लिए धोना या ड्राईक्लीन कराना जैसे आपकी स्कूल की ड्रैस को पानी से धोया जाता है जबकि ऊनी कोट तथा जैकेट आदि की सफाई ड्राईक्लीन द्वारा की जाती है।

2. कपड़ों को चमक देने के लिए कपड़ों को कड़क करने वाले पदार्थों जैसे स्टार्च तथा गोंद, या ब्लीचिंग एजेंट का प्रयोग किया जाता है। उन्हें सुखा कर उन पर इस्त्री या प्रैसिंग कीजाती है और तत्पश्चात उनकी तह लगाकर रख दिया जाता है। सूती दुपट्टे और साड़ियों पर स्टार्च लगाया जाता है।

3. कपड़ों को अल्पकाल या दीर्घकाल के लिए सम्भाल कर रखना। उदाहरण के लिए जब सर्दियों का मौसम आता है तो आप गर्मियों के कपड़ों को संभाल कर रख देते हैं और ऊनी शालों, स्वैटरों तथा कोटों आदि को बाहर निकाल लेते हैं।

दागों का वर्गीकरण -

दागों को उनके मूल स्रोत के आधार पर समूह में बांटा जाता है जैसे चाय और कॉफी तथा तेलों को वनस्पति तेल या घी को उनके मूल स्रोत के आधार पर। जब ये दाग हटाए जाते हैं तो उन्हें हटाने के लिए हम उन्हीं साधनों तथा पद्धति का प्रयोग करते हैं।

दागों की श्रेणी	दाग
वनस्पति दाग	चाय, कॉफी, फल
चिकने दाग	मक्खन, घी, तेल, तरी, जूता पॉलिश, टार, तेल पेंट
पशु दाग	रक्त, दूध, अंडा
खनिज दाग	जंग
विविध दाग	रंजक, स्याही, घास, पसीना

1 दाग हटाने की पद्धतियाँ- दाग हटाने की दो तकनीक हैं:-

(i) स्पांजिंग (सोखना) तथा (ii) डिपिंग (डुबोकर रखना) ।

स्पांजिंग / सोखना-

अवशोषक कागज या कपड़े को दाग के नीचे इस प्रकार रखें ताकि दाग का दायां छोर अवशोषक सतह की ओर आए। अवशोषण हमेशा दाग की उल्टी तरफ किया जाना चाहिए।

1. एक नरम कपड़ा लें, इसे दाग निकालने वाले पदार्थ में डुबोएँ और सुगमता से उस दाग को बाहरी छोर से शुरु करते हुए भीतरी छोर की ओर केन्द्र तक लाएँ ।

2. हल्के व घुमावदार रूप से साफ करें जिससे कि दाग कपड़े पर न फैले।

3. जैसे ही अवशोषक कागज या कपड़े (जिसे सामान्यतः ब्लॉटर कहते हैं) या अवशोषक में दाग के निशान दिखने लगें उसे बदल दें।

डुबो कर रखना (Dipping) -

डिपिंग की पद्धति में सम्पूर्ण वस्त्र को दाग निकालने वाले पदार्थ में डुबा कर रखा जाता है। दाग निकालने के लिए प्रयोग होने वाले कुछ पदार्थों में शामिल हैं बोरेक्स पाउडर, एमोनिया, हाईड्रोजन पेरोक्साइड, और तत्काल प्रयोग किए जाने वाले ब्लीच की सहायता से दागों को निकाला जाता है ।

दाग निकालते समय रखी जाने वाली सावधानियां :

1 दाग को उसी समय निकाल लेना चाहिए जब दाग ताजा हो।

2 पहले यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए की दाग किस वस्तु का है ।

3 दाग निकालने वाले ऐसे पदार्थ का उपयोग करना चाहिए जो वस्त्र को हानि नहीं पहुचायें ।

4 दाग निकालने के पश्चात् कपड़े को बार-बार पानी से साफ़ करें।

दागों के प्रकार तथा इन्हे हटाने की पद्धति		
1. वनस्पति दाग	चाय, कॉफी, फल आदि	
साफ करने की विधि	दागों को हटाने के लिए बोरेक्स पाउडर का प्रयोग करें	
दाग	सफेद सूती वस्त्र	रंगीन सूती वस्त्र
चाय/कॉफी, चॉकलेट,फल	दाग के ऊपर गर्म पानी डालें।	पानी व बोरेक्स (2 कप पानी + छोटा चम्मच बोरेक्स) के मिश्रण में डुबा कर रखें।
हिना (मेहंदी)	आधे घंटे के लिए गुनगुने दूध में डूबाकर रखें।	सफेद सूती कपड़े के लिए प्रयोग होने वाली प्रक्रिया को अपनाएँ।
2. पशुओं के दाग	रक्त, दूध, अंडा आदि	
साफ करने की विधि	ताप से बचाना चाहिए क्योंकि इन दागों में प्रोटीन होता है और ताप उपचार के कारण ये कपड़े पर स्थिर हो जाते हैं।	
दाग	सफेद सूती वस्त्र	रंगीन सूती वस्त्र
रक्त, अंडा, माँस	नये दाग के लिएठंडे पानी तथा साबुन से साफ करें पुराने दाग के लिएनमक के पानी (2 छोटे चम्मच नमक+एक बाल्टी पानी) या हल्के अमोनिया में डूबोएँ	सफेद सूती कपड़े के लिए प्रयोग होने वाली प्रक्रिया को अपनाएँ।
3.चिकने दाग	मक्खन, घी, तेल, तरी, जूते की पॉलिश, तार कोल, ऑयल पेंट आदि	
साफ करने की विधि	चिकने पदार्थ को हटाने के लिए चिकनाई अवशोषक तथा वलायकों जैसे चॉक, टेलकम पाउडर का प्रयोग करें तथा तत्पश्चात रंग को हटा दें।	
दाग	सफेद सूती वस्त्र	रंगीन सूती वस्त्र
मक्खन, घी, तेल, तरी	नये दाग के लिएगर्म पानी तथा साबुन से धोएँ। धूप में घास या झाड़ी/पौधे के ऊपर रखकर इसे सुखाएँ पुराने दाग के लिए साबुन व पानी का लेप बना लें और इसे दाग के उपर लगाएँ।	सफेद सूती कपड़े के लिएप्रयोग होने वाली प्रक्रियाको अपनाएँ किन्तु इसेछायामें सुखाएँ।
पेंट, जूते की पॉलिश, नेल पॉलिश, लिपिस्टिक, बॉल पैन	दाग के अतिरिक्त भाग को खुरच कर निकाल लें स्पिरिट या मिट्टी के तेल से दाग को स्पंज की सहायता से साफ करें	सफेद सूती कपड़े के लिएप्रयोग होने वाली प्रक्रियाकोअपनाएँ।
4. खनिज दाग	जंग तथा अन्य दवाएँ	
साफ करने की विधि	इनका उपचार हल्के अम्लीय अभिकर्मक द्वारा किया जाता है और निराकरण हेतु एल्केलाईन घोल में डाला जाता है।	
दाग	सफेद सूती वस्त्र	रंगीन सूती वस्त्र
लोहे की जंग	नींबू का रस तथा नमक के मिश्रण को रगड़ें	सफेद सूती कपड़े के लिएप्रयोग होने वाली प्रक्रियाको अपनाएँ।
5. विविध दाग	रंजक, स्याही, फफूँद, , घास, पसीना आदि।	
साफ करने की विधि	प्रत्येक दाग के लिए विशिष्ट उपचार का प्रयोग करें।	
दाग	सफेद सूती वस्त्र	रंगीन सूती वस्त्र
घास	नये दागों को साबुन व पानी से धोएँ पुराने दागों को स्प्रीट से साफ करें	सफेद सूती कपड़े के लिए प्रयोग होने वाली प्रक्रिया को अपनाएँ।
पान	प्याज का लेप बनाकर दाग पर लगाएँ और इसे धूप में रख दें।	सफेद सूती कपड़े के लिए प्रयोग होने वाली प्रक्रिया को अपनाएँ।
स्याही	नये दागों को साबुन व ठंडे पानी से साफ करें। पुराने दागों को 1. इसे खट्टी छाछ में आधे घंटे के लिए डुबा कर रखें। 2. नींबू का रस व नमक लगाकर इसे धूप में रख दें।	सफेद सूती कपड़े के लिए प्रयोग होने वाली प्रक्रिया को अपनाएँ ।

3. धुलाई- कपड़ों की लांडरी/धुलाई में निम्नलिखित चरण शामिल हैं:

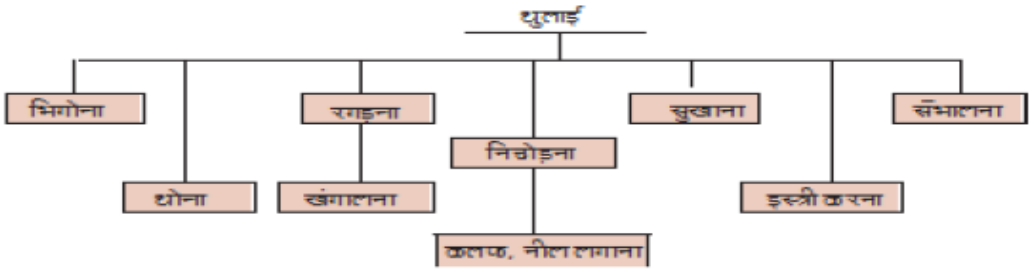

1. भिगोना (Soaking) -

कपड़े को पानी में भिगोने से उसमें लगे गैर-चिकने मैल के कण पानी में कपड़े के ऊपर नीचे करने से निकल जाते हैं। गीले होने पर कमजोर पड़ने वाले कपड़ों को लंबे समय तक भिगो कर नहीं रखना चाहिए। एक बाल्टी में अधिक कपड़ों को भिगोना नहीं चाहिए। कपड़ों से मैल के कणों को अलग निकालने के लिए कुछ स्थान अवश्य देना चाहिए। कपड़ों को आधे घंटे से अधिक समय के लिए पानी में भिगोकर नहीं रखना चाहिए अन्यथा कपड़ों से निकला हुआ मैल पुनः कपड़े में चिपक जाता है।

2. धोना (Washing) -

धुलाई की प्रक्रिया में कपड़े को भिगोने के दौरान हल्के हुए मैल को निकालना भी शामिल है। ऐसा करने के कई तरीके होते हैं।

1. हाथों से रगड़नाः कपड़े धोने की यह सबसे सामान्य पद्धति है। कपड़े के मैल लगे भाग को अपने हाथ मजबूती के साथ तब तक रगड़ें जब तक कि मैल निकल न जाए। यह पद्धति कपड़े के अत्यधिक मैले तथा बहुत छोटे भाग को साफ करने के लिए उपयुक्त है जैसे कमीज के कफ, कॉलर तथा नीचे पहने जाने वाले कपड़ों का निचला भाग, रुमाल तथा लेस आदि ।

2. ब्रश रगड़नाः रसोई में सफाई के लिए प्रयोग होने वाले डॅस्टरों से मैल, चिकनाई तथा दाग निकालने के लिए ब्रश का प्रयोग किया जाता है क्योंकि इसमें लगा मैल और दाग बहुत गाढ़े होते हैं। याद रखें कि कपड़े पर ब्रश रगड़ने से पूर्व उसे सपाट व कठोर सतह पर रखें। कड़ाई से ब्रश रगड़ने पर मैल तो निकल जाता है किन्तु कपड़ा जल्दी फट जाता है।

3. मसलना (kneading) तथा निचोड़ना (squeezing) : इस पद्धति का प्रयोगनाजुक कपड़ो जैसे रेशमी, ऊनी तथा लिनेन कपड़ों के लिए किया जाता है। इससे कपड़े को कोई क्षति नहीं होती है या उसके रंग में कोई परिवर्तन नहीं होता है क्योंकि इस पद्धति में जब कपड़े साबुन के घोल में होते हैं तो हाथों से बार- बार कपड़े पर सुगमता से दबाव डाला जाता है।

4. मशीन से धुलाई : मशीन से धुलाई एक श्रम रहित उपकरण है और यह कपड़ों की धुलाई के लिए अपेक्षित सभी घर्षण उपलब्ध कराती है। मशीन से धुलाई का समय कपड़े के प्रकार तथा मैल की मात्रा के आधार पर निर्धारित किया जाता है। उदाहरण के लिए ऊनी कपड़ों की धुलाई में सूती कपड़ों की तुलना में कम समय लगता है। बाजार में स्वचालित, अर्ध-स्वचालित तथा गैर-स्वचालित मशीनें उपलब्ध हैं। स्वचालित वाशिंग

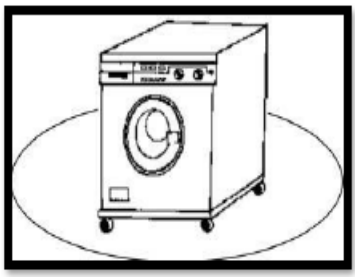

मशीन का लाभ यह है कि इसमें एक स्पिनर होता है जो धुलाई के पश्चात् कपड़ों को निचोड़ता भी है जिससे कपड़े लगभग सूख जाते हैं। यह विशेष रूप से बड़े व भारी कपड़ों जैसे चादर, परदे आदि की धुलाई के लिए लाभदायक है। धुलाई के लिए कपड़ों को मशीन में डालते समय ध्यान रखना चाहिए क्योंकि कुछ कपड़ों के रंग निकल जाते हैं और वे मशीन में पड़े अन्य कपड़ों को खराब कर देते हैं।

15 विशेष प्रकार के कपड़ों की धुलाई-

सर्वप्रथम आपको कपड़ों को विभाजित करना होगा। कपड़ों का विभाजन करके आप इनके निम्नलिखित प्रकार से ढेर लगाएँगे -

1. सूती कपड़े जिसमें सफेद अधोवस्त्र, पैजामा, सलवार, पेटीकोट, कमीज, रसोई का डस्टर, चादर, तकिए के गिलाफ और इसी प्रकार के कपड़े शामिल होंगे।

2. रंगीन सूती कपड़े जैसे साड़ी, ब्लाऊज, सलवार सूट तथा दुपट्टा ।

3. कृत्रिम रेशे वाले कपड़े जैसे कमीज, साड़ी, ब्लाऊज, तथा दुपट्टा आदि ।

4. सिल्क की साड़ी, ब्लाऊज, कमीज आदि ।

5. ऊनी स्वैटर, मॅफलर तथा शॉल।

1. सूती कपड़ों की धुलाई-

इन्हें मुख्य रूप से गुनगुने या गर्म पानी में आधे घंटे के लिए भिगोया जाएगा। सभी सफेद कपड़ों को साबुन / डिटर्जेंट के घोल में डुबोएँ । अधिक गंदे भाग पर अतिरिक्त साबुन लगा कर उसे रगड़ें। सफेद कपड़ों पर माँड लगाना एक अन्य प्रक्रिया है जिसे कपड़ों को सुखाने के लिए डालने से पूर्व किया जाता है। इसका प्रयोग सूती कपड़े को चिकना तथा चमकदार कर नया रूप प्रदान करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त माँड लगे कपड़े जल्दी गंदे नहीं होते हैं |

2. रंगीन कपड़ों की धुलाई-

यदि किसी सूती कपड़े का रंग निकलता हो तो उसे भिगो कर न रखें। उन्हें धोने के लिए हल्के या न्यूट्रल साबुन का प्रयोग करें। इनको धोने के लिए मसलने व निचोड़ने की पद्धति का प्रयोग करें। कपड़े को अच्छी तरह से निचोड़ें तथा अंतिम बारी में कपड़े को उल्टा करके उस पर माँड लगाएँ। इसे छाया में सुखाएँ।

3. कृत्रिम (Synthetics) कपड़ों की धुलाई-

नाइलॉन, पॉलिएस्टर तथा एक्रेलिक कृत्रिम कपड़े हैं। इसलिए कृत्रिम कपड़ों की धुलाई कुछ भिन्न प्रकार

से की जाती है।

इनके लिए गुनगुने या ठंडे पानी का प्रयोग करें। गर्म पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे कपड़े में बहुत बुरी तरह से सिलवटें पड़ जाती हैं। इनकी धुलाई के समय कोई अच्छा साबुन प्रयोग करें और हल्के हाथों से दबाव डालें व रगड़ें। साबुन को पूरी तरह से निकालने के लिए ठंडे पानी में अच्छी तरह से धोलें। सिलवटों से बचने के लिए इन्हें कसकर न निचोड़ें। इन्हें मुख्य रूप से हैंगर में ही सुखाएँ । इससे कपड़ों के मूल आकार को बनाए रखने में मदद मिलती है। सूखने के पश्चात् यदि आवश्यकता हो तो कपड़ों पर कम गर्म इस्त्री की जा सकती है।

4. रेशमी कपड़ों की धुलाई-

गुनगुने या ठंडे पानी में एक अच्छे हल्के साबुन का प्रयोग करें तथा इन्हें धोते समय हल्का दबाव हल्के हाथों से रगड़ें। रेशमी कपड़ों को भिगोकर रखने की आवश्यकता नहीं है। साबुन को पूरी तरह से निकालने के लिए अच्छी तरही से खंगाल लें। इनमें माँड लगाएँ तथा छाँव में सूखने के लिए टांग दें। जब कपड़े हल्के सूख जाएँ और उनमें कुछ नमी रह जाए तो उन्हें निकाल लें और हल्की गर्म इस्त्री से प्रैस करें।

5. ऊनी कपड़ों की धुलाई-

ऊनी कपड़े घर में प्रयोग होने वाले किसी भी अन्य कपड़े से अधिक नाजुक होते हैं। ऊनी कपड़ों की सतह पर रेशे होते हैं और इनकी सही ढंग से देखरेख न की जाए तो इनमें रूएँ निकल आते हैं। इसलिए ऊनी कपड़ों की धुलाई के समय विशेष सावधानी रखनी चाहिए। गुनगुने पानी में हल्के एल्केलाई साबुन / डिटर्जेंट को अच्छी तरह से घोल लें। इनकी धुलाई के लिए मसलने व निचोड़ने की पद्धति का अनुसरण करें। इन्हें अच्छी तरह से खंगाल लें।

सूती कपड़ों में कलफ लगाने के लाभ :-

i. सूती कपड़ों में कड़कपन आ जाता है ।

ii. कलफ वस्त्रों के धागों के बीच के स्थान की पूर्ति करता है । इसमें वस्त्रों पर धूल एवं गन्दगी कम लगती है ।

iii. कलफ से कपड़ों में चमक एवं नवीनता आ जाती है ।

iv. कपड़ों की क्रीज अच्छी बनती है ।

V. प्रेस करने में आसानी रहती है ।

कलफ बनाना:

कलफ कई वस्तुओं से बनाया जा सकता है| जैसे-अरारोट, साबूदाना, मैदा, चावल,गोंद, आदि ।

वस्त्रों को सुखाने के नियम :

i. वस्त्रों को उल्टा करके सुखाएं ।

ii. रस्सी व तार को अच्छी तरह पोंछ लें ।

iii. कपड़े को अच्छी तरह निचोड़कर व झटकाकर सुखाएं ।

धूप में वस्त्रों को सुखाने से लाभ :-

i. कपड़े शीघ्र सूख जाते हैं ।

ii. नील व कलफ की गन्ध समाप्त हो जाती है ।

iii. सीलन की बदबू समाप्त हो जाती है ।

iv. जीवाणु नष्ट हो जाते हैं |

डिजिटल सामग्री - प्रा-डिजि फॉर स्कूल एप्प में जाकर वीडियो देखें |